ISSN 2320-0359
वर्ष-6, अंक-60, (अंक-180) जनवरी-मार्च, 2019

युद्धरत आम आदमी

वंचित समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक पत्रिका

प्रधान संपादक
रमणिका गुप्ता

अतिथि संपादक
स्वाति श्वेता

सहयोग राशि : 40 रु.

आवरण फोटो : नेहा

पुस्तक सूची

रमणिका फाउंडेशन द्वारा तैयार की गई उपलब्ध आदिवासी, दलित/स्त्री एवं अन्य पुस्तकों की सूची

संपर्क एवं प्रशासनिक कार्यालय जे-56, बेसमेंट, लाजपत नगर-3, नई दिल्ली-110024

फोन : 011-46577704/05, मो. 09312039505, 9821127505

bã~áä=W~ã åáâ~M]Ö ã~áäKÅçã

	पुस्तक का नाम	लेखक/संपादक का नाम	विधा	वर्ष	मूल्य
1.	असम नर संहार–एक रपट	ले. रमणिका गुप्ता	आलेख	1983	03/-
2.	पूर्वांचल एक कविता यात्रा	ले. रमणिका गुप्ता	कविता (आदिवासी)	1985/1994	120/-
3.	बोनेक बोल	सं. रमणिका गुप्ता/सं. प्राणेश कुमार	कविता	1994	35/-
4.	सीता/मौसी	ले. रमणिका गुप्ता	उपन्यास (आदिवासी)	1996/97/2010	225/-
5.	आदिम से आदमी तक	ले. रमणिका गुप्ता	कविता संग्रह (इतिहास)	1997	200/-
6.	बहू-जुठाई	ले. रमणिका गुप्ता	कहानी संग्रह	1998/2010	200/-
7.	आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी	सं. रमणिका गुप्ता	विविध	1998/2002	595/-
8.	आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह	स. रमणिका गुप्ता	आलेख तथा कथाएं	2003/2004	55/-
9.	मॉसी (पंजाबी)	ले. रमणिका गुप्ता	उपन्यास	1997/2003	225/-
10.	निज घरे परदेसी	ले. रमणिका गुप्ता	आलेख	2004	125/-
11.	अपने घर की तलाश	ले. निर्मला पुतुल	कविता	2004	125/-
12.	आदिवासी लोक-1	सं. रमणिका गुप्ता	विविध	2006	350/-
13.	आदिवासी लोक–2	सं. रमणिका गुप्ता	विविध	2006	350/-
14.	उनकी जिजीविषा : उनका संघर्ष	सं. हेमलता महिश्वर	आलेख	2006	150/-
15.	भारत के आदिवासी लेखक परिचय एवं अवदान भाग-1: पूर्वो. भारत	सं. रमणिका गुप्ता	परिचय	2006	450/-
16.	fåÇÖÉåçìë=t êáíÉêë=çÑ=fåÇá~=fåíêçÇìÅíáçå= ~åÇ= çåíêáÄìíáçåë=s çäìãÉ=N=kçêíÜJb~ëí=fåÇá~=	bÇKo=~ã åáâ~=dé í~=	_áÄäáçÖê~éÜ	2006	450/-
17.	qêáÄ~ä=ç åíÉãéç ê~êó=fåÇá~å=ê~áë~ä~åÇ=fåíÉêîáÉ~åçå=	t K=o~ãåâ~=dìéí~=	^êíáÅäÉ=	2007	250/-
18.	आदिवासी विकास से विस्थापन	सं. रमणिका गुप्ता	आलेख	2008/2011	350/-
19.	आदिवासी साहित्य-यात्रा	सं. रमणिका गुप्ता	आलेख	2008/2011	275/-
20.	आदिवासी कौन	सं. रमणिका गुप्ता	आलेख	2008/2011	250/-
21.	पहाड़ हिलने लगा है	ले. वाहरू सोनवण	कविता	2009	75/-
22.	पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियां	सं. रमणिका गुप्ता	आदिवासी कहानियां	2010	60/-
23.	पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं	सं. रमणिका गुप्ता	मिथक व लोककथाएं	2010	110/-
24.	संताली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	ले. कृष्णचंद्र टुडू	आलेख	2011	595/-
25.	आदिवासी भाषा और शिक्षा	सं. रमणिका गुप्ता	आदिवासी आलेख	2012	250/-
26.	आदिवासी अस्मिता की पड़ताल करते साक्षात्कार	सं. रमणिका गुप्ता	आदिवासी आलेख	2012	295/-
27.	आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह (पूर्वोत्तर)	सं. रमणिका गुप्ता	आदिवासी आलेख	2012	300/-
28.	स्वर्ण सीढ़ी से उतरते शिशुगण	ले. सुमार सिंह सावियान/सं. रमणिका गुप्ता		2012	150/-
29.	नन्हें सपनों का सुख	ले. सरिता बड़ाइक	(कविता-संग्रह)	2013	150/-
30.	आदिवासी लेखन एक उभरती चेतना	ले. रमणिका गुप्ता	आदिवासी आलेख	2013	250/-
31.	आदिवासी अस्मिता का संकट	ले. रमणिका गुप्ता	आदिवासी आलेख	2013	250/-
32.	मलसॉमा	ले. खॉलकुंगी	उपन्यास	2014	250/-
33.	भारत की क्रांतिकारी आदिवासी औरतें	ले. वासवी किड़ो	शौर्यगाथाएं	2014	90/-
34.	आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह (झारखंड)	सं. रमणिका गुप्ता	आलेख/कथाएं	2015	280/-
35.	आदिवासी : सृजन मिथक एवं अन्य लोककथाएं	सं. रमणिका गुप्ता	मिथक	2015	500/-
36.	भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण झारखंड की भाषाएं	मुख्य सं. गणेश एन. देवी/सह सं. रमणिका गुप्ता सह. सं. प्रभात कु. सिंह	सर्वेक्षण	2015	675/-
37.	कलम को तीर होने दो	सं. रमणिका गुप्ता	आदिवासी कविता-संग्रह	2015	225/-
38.	विमुक्त-घुमन्तू आदिवासियों की मुक्ति-संघर्ष	सं. रमणिका गुप्ता	आलेख	2015	250/-
39.	आदिवासी समाज और साहित्य	सं. रमणिका गुप्ता	आलेख	2015	300/-
40.	आदिवासी कविताएं	ले. रमणिका गुप्ता	कविता-संग्रह	2016	10/-
41.	दलित चेतना : कविता	सं. रमणिका गुप्ता	कविता	1996/2012	300/-
42.	दलित चेतना साहित्य	सं. रमणिका गुप्ता	आलेख	1996/2012	300/-
43.	दलित चेतना सोच	सं. रमणिका गुप्ता	आलेख	1996/2012	350/-
44.	दूसरी दुनिया का यथार्थ	सं. रमणिका गुप्ता	दलित कहानियां	1997/2012	400/-

वर्ष-6, अंक-60, (अंक-180) जनवरी-मार्च -2019

युद्धरत आम आदमी

वंचित समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक पत्रिका

संपादक मंडल

सोमदत्त शर्मा, अभय मोर्य, हरिराम मीणा, अनामिका, मदन कश्यप
सूरजपाल चौहान, हेमलता महिश्वर

कविता विशेषांक

संपादक
रमणिका गुप्ता

अतिथि संपादक
स्वाति श्वेता

लेआउट और आवरण	रेखाचित्र	प्रबंधन सहयोग
बर्नड हेम्ब्रम	**अनुप्रिया**	**अशोक कुमार**

युद्धरत आम आदमी
अब आप वेबसाइट **www.ramnikafoundation-yuddhrataamadmi.org** पर देख सकते हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के हैं, इसमें 'युद्धरत आम आदमी', सम्पादक या सम्पादक मंडल की सहमति जरूरी नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। सम्पादन और संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

'युद्धरत आम आदमी'

का

वर्ष 2019 में हर अंक एक विशेषांक

अप्रैल–जून, 2019
कहानी विशेषांक
अतिथि सम्पादक–टेकचन्द

जुलाई–सितम्बर, 2019
यात्रा-संस्मरण विशेषांक
अतिथि सम्पादक–अजय नावरिया

अक्टूबर–दिसम्बर, 2019
साक्षात्कार एवं रिपोर्ताज विशेषांक
अतिथि सम्पादक–पंकज शर्मा

कृपया अपनी अभी से प्रति आरक्षित करायें

संपर्क : ए-221, ग्राउंड फ्लोर, डिफेंस कॉलोनी, नयी दिल्ली-110024
फोन : 011-46577704, 9821127505
ईमेल : ramnika01@gmail.com

अनुक्रम जनवरी-मार्च, 2019

खरी-खरी बात

इक्कीसवीं सदी के अगले मुहाने पर खड़ी कविता — रमणिका गुप्ता — 5

सम्पादकीय

अभी सूर्य मध्यान्ह काल में नहीं आया है, परन्तु आएगा जरूर... — स्वाति श्वेता — 6

स्त्री-कविता

मालिनी गौतम — 8
प्रज्ञा रावत — 10
अनुपमा तिवारी — 11
सीमा संगसार — 13
संध्या नवोदिता — 14
मृदुला शुक्ला — 15
गगन गिल — 17
राजेन्द्र परदेसी — 18
अनामिका — 19
मणिका मोहिनी — 21
प्रितपाल कौर — 22
अंजू शर्मा — 23
सत्य प्रकाश — 26

आदिवासी कविता

अनपा मार्डी — 27
श्याम सी. टुडू — 29
चन्द्रमोहन किस्कू — 30
आलोका कुजूर — 31
नीरा परमार — 33
संजय अलंग — 35
नीरज नीर — 38
निर्देश निधि — 41

दलित कविता

असंगघोष — 43
टेकचन्द — 44
सुरेश पवार — 45
मुसाफिर बैठा — 47
सुरेश उजाला — 48
श्रीकांत व्यास — 49
नन्दलाल भारती — 51
जय प्रकाश वाल्मीकि — 52
नगमा जावेद मालिक — 53
आर.डी. आनंद — 54

प्रफुल्ल कुमार रंजन 55
रानी कुमारी 57
संतोष श्रीवास्तव 'सम' 57
कादिर अली वाहिद 58
दयालचन्द जास्ट 60

जन कविता

राजेश जोशी 61
मदन कश्यप 62
सुशांत सुप्रिय 63
नवनीत पाण्डेय 65
महाभूत चन्दन राय 67
मार्टिन जॉन 68
राम दरश मिश्र 70
शीतांशु शशिभूषण 71
ध्रुव गुप्त 74
अग्निशेखर 76
निरंजन क्षोत्रिय 77
मणि मोहन मेहता 78
दिविक रमेश 79
भारत यायावर 80
धर्मपाल महेन्द्र जैन 82
प्रकाश खत्री 85
धर्मचन्द्र विद्यालंकार 86
नरेन्द्र पुण्डरीक 87
नरेन्द्र कुमार 89
सर्वेश्वर प्रताप सिंह 90
राजीव कुमार त्रिगर्ती 91
निशान्त 92
नित्यानन्द गायेन 93
राकेश शर्मा 95
श्रीधर करुणानिधि 97
अशोक सिंह 98
आभा दूबे 100
सुमन केसरी 102
जितेन्द्र श्रीवास्तव 105
स्वाति श्वेता 107

रपट

भारतीय जन लेखक संघ दिल्ली का प्रथम राज्य सम्मेलन सम्पन्न — महेन्द्र नारायण पंकज 109

रीडिंग रूम

समाज बदइंतजामी का राहु–'कोयले की चिंगारी' — आरिफ ग. जमादार 110
जनवादी चेतना और वैचारिक संघर्ष के कवि : उमाशंकर राव .... — अशोक सिंह 113
आक्रोश का सचेत स्वर — पुनीता जैन 116

श्रद्धांजलि

भारत में गोंडी भाषा और साहित्य का दीपक जलाने वाला कर्मनिष्ठ.... — उषाकिरण आत्राम 119

इक्कीसवीं सदी के अगले मुहाने पर खड़ी कविता

कविता इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुकी है। यह बीसवीं सदी की कविता के पटाक्षेप के बीच से नई अवधारणाओं को लेकर अपने सफर की ओर बढ़ चुकी है। इक्कीसवीं सदी के अगले मुहाने पर खड़ी कविता नए प्रयोगों की कविता है। इस दुनिया के भीतर से निकली एक और दुनिया को नए शब्द और नए अर्थ देने की कविता है। ये कविताएँ बहुत से नए प्रश्न पैदा करती हैं। ऐसे प्रश्न जो भारतीय जनजीवन की छटपटाहट को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। आज प्रतिरोध की ध्वनियाँ दिन पर दिन मुखरित हो रही हैं। मनुष्य प्रतिरोध के बिना जिंदा नहीं रह सकता। जन्म से लेकर मृत्यु तक वह प्रतिरोध में जूझते हुए विकसित होता है। प्रतिरोध की शक्ति के बिना न मनुष्य विकसित हो सकता है और न ही प्रकृति। टकराव-घर्षण जरूरी है विकास के लिए। मनुष्य के अस्तित्व में ही प्रतिरोध निहित है, बस उसका स्वर ऊँचा करने की जरूरत है। कविता इसी प्रतिरोध को स्वर देती है।

सृजन के सामाजिक आधारों और उसकी मनोभूमियों से गुजरते हुए लगता है उनमें एक गहरा आंतरिक रिश्ता है। इस रिश्ते को कविता की समकालीन प्रवृत्तियों और आंदोलनों के बीच रखकर देखा जा सकता है। ये कविताएँ जहाँ मनुष्य की हालत का चित्रण करती हैं वहीं वे उसकी विसंगतियों को, मनोदशाओं को भी उभारती हैं। इस विशेषांक की रूपरेखा स्त्री-कविता, आदिवासी कविता, दलित कविता और जन कविता के रूप में बनाई गई है। भारत में शारीरिक संरचना तथा लिंग के आधार पर स्त्री को दबाया जाता रहा है, तो दूसरी तरफ मनुष्य ने दूसरे मनुष्य को उसके रंग को आधार बनाकर दबाया। संपत्ति और धन के आधार पर तो मनुष्य ने पहले ही अमीर-गरीब के वर्गों में बाँट रखा था। जब मनुष्य की नजर में मनुष्य की समानता का सवाल पश्चिम में फ्रांस में उठा तो वर्गीय प्रतिरोध मुखर हुआ, जो लिंगीय प्रतिरोध तक पहुँच गया। बाद में वर्णीय प्रतिरोध की बात भी गूँजने लगीं। इसी कारण भारत में सामाजिक स्तर पर वंचित समाज पर लगी वर्जनाओं, बराबरी-आजदे-भाईचारे के अधिकारों को षड़यंत्र पूर्वक छीनने के प्रयासों तथा शिक्षा से वंचित रखने के खिलाफ, आंदोलन शुरू हो गए, जमीन पर भी और कलम से भी। मनु के विरुद्ध भी और सरकार के विरुद्ध भी।

आदिवासी भी इन्हीं वंचित जमातों जैसी ही एक और बड़ी जमात है, जिसे बहिष्कृत कर जंगलों में खदेड़ दिया गया था। आज आदिवासी दलित कविताएँ इस अन्याय को मुद्दा बनाकर मनुष्य होने की घोषणा कर रही हैं और मनुष्य की तरह जीने का अधिकार माँग रही हैं जो उनसे छीन लिया गया था।

स्त्री केन्द्रित कविताएँ यथा स्थिति के प्रति विद्रोह को, स्त्री-सुलभ स्त्री-पीड़ा को दिखाती चली जा रही हैं। ये कविताएँ भीतर से बाहर निजता से समाज की ओर फैलती हैं। इस अंक की कविताओं में दृश्य-बिंबों को सजीव करने वाली भाषा है तथा अवसाद और चिंता के स्वर हैं। यह राजनीतिक क्रूरता और आत्म व्यंग्य के कड़े स्वरों को भी कहने का दमखम रखती हैं। कई कविताओं में तो देशज भाषा का सौंदर्य देखते ही बनता है। इन सब कविताओं के अपने-अपने सौंदर्यशास्त्र हैं। इस अंक में कुल 64 कवि-कवयित्रियों की कविताओं को लिया गया है। स्वाति श्वेता की मेहनत से हम इसे यह रूप दे पाए हैं।

आशा है कि पाठकगण इन अवधारणाओं को आत्मसात कर इसे और आगे बढ़ाएँगे।

❐

रमणिका गुप्ता

युद्धरत आम आदमी पत्रिका में प्रकाशित आलेख तथा अन्य सामग्री *https://yuddhrataamaadmi.page* पर पढ़े

सम्पादकीय

अभी सूर्य मध्यान्ह काल में नहीं आया है, परन्तु आएगा जरूर...

प्रसिद्ध अस्तित्ववादी और परिघटनावादी चिंतक मार्टिन हाइडेगर ने भाषा को हमारी भविता का घर माना है, जिसमें हम रहते हैं, जो इसके शब्दों के माध्यम से सोचते और रचते हैं, वे इस घर के अभिभावक है। उन्हीं अभिभावकों ने कविता को रचा और पुराने प्रतिमानों और विचारों की पृष्ठभूमि पर खड़ी कविता ने एक नई जिद पकड़ी और नए सवालों के धरातल पर नई शक्ल इख्तियार कर आगे बढ़ गई। भले ही परंपरागत अवधारणाओं ने उसके रास्ते पर दीवारें खड़ी कर दी हों लेकिन कविता ने बदलती हुई दुनिया में स्वयं के लिए नए मार्गों की तलाश करना जारी रखा। उसने कई दीवारों में सुराख कर अपना रास्ता बनाया। इन्हीं अभिभावकों ने कविता के माध्यम से बँधी-बँधाई सरहदों को तोड़ा और स्त्री स्वर, आदिवासी स्वर, दलित स्वर और जनवादी स्वर के रेशों से बहुत कुछ बुना और बुनने का प्रयास किया। मुझे याद आ रहा है टॉलस्टॉय का एक कथन जिसमें उन्होंने कहा था कि प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन हो रहा है। हम केवल अपने को कायम रखने के लिए अपनी नींव को सुदृढ़ बनाना है। इस कविता विशेषांक को निकालने का कारण भी यही था कि इन सभी स्वरों को एक साथ यहाँ बुना जाए, भारतीय मन को यहाँ रखा जाए और मध्यवर्गीय/कमजोर वर्ग के जीवन के नए संदर्भों को स्वर दिया जाए। इन कविताओं में काव्यानुभूति की संस्कृति का परिवर्तन इन्हें एक अलग पहचान देता है। नए कवियों की आहट ने वरिष्ठ कवियों के साथ अपनी पुरजोर मौजूदगी हिन्दी कविता में दर्ज कराई है। नए बिंबों के द्वारा जीवन की विसंगतियों को उभारा है/बुना है। बुनना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। हमने कुछ स्वरों को इस विशेषांक में बुनने की कोशिश की है और वे स्वर जो रह गए, उन्हें आगामी विशेषांक के लिए रख लिया है...

...भारतीय स्त्री एक पिछड़े हुए समाज और अगड़े समाज दोनों के प्रश्नों के बीच झूल रही है। इन्हीं प्रश्नों के बीच महिला मुक्ति, नारी चेतना तथा उससे संबंधित अनेक प्रश्न उठे, बहुत सारे आयोग बने, कानून बदले गए और नए कानून आजतक गढ़े जा रहे हैं। वन्य पशु स्वतन्त्र हैं अपने जीवन को लेकर। फिर मनुष्य ने यह कब और कैसे निश्चित कर लिया कि स्त्री इस स्वतन्त्रता की हकदार नहीं है। कब ये निर्धारित हो गया कि स्त्री दोयम है। उसे देवी बनाकर पूजा तो जा सकता हैं पर मानवीय अधिकारों से उसे दूर रखना चाहिए। इस अंक की स्त्री कविताएँ यह बताने की कोशिश करती हैं कि स्त्री मैदान में उगा पूरा पेड़ है जिसकी जड़ें पूरी तरह मिट्टी के नीचे जमीं पड़ी हैं और जिसके ऊपर पाकसा आसमान है जो उसे हर मौसम से रु-ब-रु कराता रहेगा। वह ड्राइंगरूम में लगी बोंजाई नहीं। मेरा अपना मानना है कि हम औरत हैं तो इससे हमें गुरेज क्यों? अपने औरतपन को ओढ़ना मैं कहीं से भी गलत नहीं मानती। मैं औरतों से संबंधित उन सभी कार्यों को तल्लीनता से करना पसंद करती हूँ जिन्हें कभी पुरुष बनने की होड़ में बहुत पीछे या फिर दरकिनार कर दिया गया था। औरतें एक साथ कई भूमिकाओं से लैस हैं। वे पत्नी, बेटी, बहन, बहू, लेखिका, कहानीकार, कवि, आलोचक, चित्रकार, बावर्ची, प्रबंधक और न जाने क्या-क्या हैं। ऐसी स्थिति में उनके अंदर का नारीवाद और बलिष्ट होता है, कमजोर नहीं। ये सब उनके व्यक्तित्व को निखारने वाले अलग-अलग 'टूल्ज' हैं और पाठक इन सभी 'टूल्ज' से इस अंक की स्त्री कविताओं से रूबरू होंगे। कहते हैं कि निरंतरता के भीतर ही चुनौती निहित है कि बराबर नई पहचान होती रहे नए आकाश में, नई आँखों के द्वारा। इन कविताओं में आलोक, मात्र आलोक नहीं हैं तथा ज्योति ज्योति मात्र नहीं, वह रस भी है, वह आग भी है तो पानी भी, वह नाद भी है, दीये की लौ प्रणव की, ओंकार की अर्धमात्रा है।

समाज असंगतियों और अव्यवस्थाओं का रंगमंच रहा है और इस समाज के प्रमुख अंग थे अनाचार और अंधविश्वास। आज भी समाज वर्ग-भेद, वर्ग-भावना, जाति-भेद और अस्पृश्यता से अभिशप्त है। ध्यान से देखने पर यह प्रतीत होता है कि परिस्थितिबोध और कर्तव्यबोध आधुनिक चेतना का आधार है और वह कर्मवाद, नियतिवाद का विलोम है। कहते हैं कि प्रत्येक पीढ़ी के कवियों को अपनी अनुभूति स्वयं व्यक्त करनी होती है और उन्हें अतीत को हर बार नए सिरे